ओमशांति। मीठे2 रूहानी बच्चे यह जानते हैं कि अभी हम विश्व के मालिक बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। भल माया यह भी भुलाये देती हैं। कोई2 को तो सारा दिन भुलाये देती है। कब याद ही नहीं करते। जो खुशी भी हो। हमको भगवान पढ़ाते हैं यह भी भूल जाती हैं। भूल जाने कारण कोई सर्विस नहीं कर सकते। रात को बाबा ने समझाया अधम ते अधम जो वेश्यायें हैं उनकी सर्विस करनी चाहिए। तुम एलान करो कि तुम वेश्या से स्वर्ग की विश्व की महारानी बन सकती हो। शाहुकार लोग नहीं बन सकते हैं। आज कल उन्हों का कैसा चलता है बाबा को मालूम नहीं है। जो जानते हैं पढ़े लिखे हैं वे प्रबन्ध करें। उन्हों को उठाने का तो बिचारी बहुत खुश होंगी। क्योंकि वह भी अबलायें हैं। उनको तुम समझाये सकते हो। युक्तियां तो बहुत बाप समझाते रहते हैं। बोलो तुम ही ऊंच ते ऊंच से नीच ते नीच गिरे हो। तुम्हारे नाम से ही भारत वेश्यालय बना है। फिर तुम शिवालय में जाए सकती हो। यह पुरुषार्थ करने से। तुम अभी पैसे के लिए कितना गंदा काम करती हो। अब यह छोड़ो। समझाने से वह बहुत खुश होंगे। तुमको कोई रोक नहीं सकते। यह तो सच्ची बात है ना। गरीबों का है ही भगवान। पैसे के कारण बहुत गंदी काम करती हो। उन्हों का जैसे धंधा चलता है। अभी बच्चे कहते हैं आकर युक्तियां निकालेंगे सर्विस की वृधि को पाये। बाबा छुट्टी दे देवे तो ढेर आ जाये। कोई फिर रुठ भी पड़ते हैं। रुठ कर अपना बेरा गर्क करते हैं। ऐसे गर्म मिजाज वाले भी हैं। पढ़ाई भी छोड़ देते। यह नहीं समझते हम नहीं पढ़ेंगे तो अपना ही बेरा गर्क करेंगे। रुठ कर बैठ जाते हैं। फलाने ने यह कहा, ऐसे कहा। इसलिए आते नहीं। हफ्ते में एक बार मुश्किल आते हैं। बाबा तो मुरलियों में कब कोई राय कब कोई राय देते रहते हैं। सुनना तो चाहिए ना। क्लास में आवेंगे तो सुनेंगे। ऐसे बहुत हैं कारणे-अकारणे बहाना बनाये सो जावेंगे। अच्छा आज नहीं जाते हैं। और बाबा ऐसी अच्छी2 प्वाइन्ट सुनाते हैं, सर्विस करेंगे तो ऊंच पद भी पावेंगे। पैसे से भी सर्विस होती है। भक्ति मार्ग में तो साधुओं आद खूब पेट भरता है। वह उन्हों का जैसे धंधा है। यह तो है पढ़ाई। उन युनिवर्सिटीयों में शास्त्र बहुत पढ़ते हैं। दूसरा कोई धंधा न होगा। तो बस शास्त्र कंठ कर सतसंग शुरु कर देते हैं। उन में उद्देश्य आद तो कुछ भी नहीं हैं। इस पढ़ाई से तो सबका बेरा पार हो जाता हैं। वाणप्रस्थ में बहुत करके सतसंग आद में लग जाते हैं। आज कल तो तमोप्रधान होने कारण वाणप्रस्थी भी अपने पोत्रों आद में विकारी कुल की मर्यादा लोक लाज में फंसे रहते हैं। बच्चे की शादी करानी है नहीं तो ग्लानी होंगी। जोरी भी शादी कराये देते हैं। कोई2 बच्चियां भी बहुत गंदी होती हैं। तकदीर में नहीं हैं, कालेज में गई और सत्यानाश हुई। बाबा ने समझाया है आंखें बड़ी धोखे बाज हैं कोई अच्छा आदमी देखा बस लटक पड़ेंगी। आंखों को बड़ा सम्भालना पड़ता है। इस समय तो अंधा हो तो बेहतर है। अंधों को पता नहीं पड़ता है। इस दुनिया में तो जो सजे हैं उनको भी अंधा कहा जाता है। गीता में भी है ना अंधे के औलाद अंधे हैं। अर्थात ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। तो तुम बच्चों को ऐसे2 अधम की सर्विस करनी है। तुम्हारे पास मछी मधानी भी आ जाते हैं। शाहुकार लोग देखेंगे यहां ऐसे2 आते हैं तो उनको यहां आने दिल नहीं होगी। लज्जा आवेगा। अच्छा उन्हों को भी रे स्कूल खोल दो। वह पढ़ा है तो है पाई पैसे की शरीर निर्वाह अर्थ। यह तो है 21 जन्म लिए। कितने का कल्याण हो जावेगा। अक्सर करके मातायें ही पूछती हैं बाबा घर में गीतापाठशाला करें। पुरुष लोग तो इधर-उधर क्लबों आद में खूब घूमते रहते हैं। शाहुकार के लिए तो जैसे कि यहां ही स्वर्ग है। बड़ी मौज में रहते हैं। शादी करते हैं तो जैसे परियों का परिस्तान बन जाता है। देवताओं की नैचरल ब्युटी देखो कैसी है। कितना फर्क है। आज कल तो झूठे जेवर आद हीरे ऐसी पहनते हैं जो सच्चे हीरों से भी जास्ती चमकती है। यहां तुमको सच्च सुनाया जाता है। तो कितने थोड़े आते हैं। सो भी गरीब। और जहां झूठ चमकती है वहां कितनी मैजोरटी जाती है। उस तरफ झट चले जाते हैं। वहाँ भी सिंगार आद कर के जाते हैं। गुरु लोग विकार में जाने लिए सगाई

भी करते हैं। यहाँ किसी की सगाई की जाती है वकालिए। काम चिता पर चढ़ने से बच जाये। ज्ञान चिता पर बैठने से पदम भाग्यशाली बन जाए। बहुत अधिक धन मिलता है। कहा जाता है चलो स्वर्ग में। तो कहते हैं क्या करें यह सब हमारे उपर नैलत डालेंगे कि कुल का नाम बदनाम करते हो। शादी न कराना कायदे के बर खिलाफ है। लोक लाज कुल की मर्यादा छोड़ते नहीं हैं। एकदम अक्ल ही चट हो जाता है। भक्ति मार्ग में गाते भी हैं मेरा तो एक दूसरा न कोई। मीरा की भी गीत हैना। मिनेत्स में मीरा नम्बरवन है भक्त में नारदभक्ति गाया हुआ हैं। नारद की भी कहानी है ना। तुमको कोई नया आदमी कहे मैं लक्ष्मी को वर सकता हूं। बोलो अपने को देखो। लायक हो? या बन्दर हो। नारद को भी कहा ना तुम अपनी शिकल तो देखो आईने में। हो सकता है बन्दर के शिकल भी देखे हो। ड्रामा में यह भी हो तो तथ्य नहीं हैं। अभी तुम खुद भी कहेंगे हम बन्दर से भी बदतर थे। जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है यह भी कहते हैं हम बन्दर से भी बदतर विकारी थे। यह जन्म करके अच्छा रहा है। अगले जन्म में पता नहीं क्या किया। पतित तो बने हैं ना। बाप कहते हैं तुम सब बन्दर मिसल थे। सुरत मनुष्य की, चलन बन्दर की थी। इनसे भी बदतर कहें। जनावर के बच्चे कब अपने माँ-बाप से झगड़ा आद नहीं करेंगे। यहाँ तो देखो बच्चे माँ-बाप से भी लड़ पड़ते। कितना तंग करते हैं। यह ऐसी दुनिया है ना। अब बाप आए हैं सबको सुखी बनाने। यहाँ बाबा के पास आते हैं प्रतिज्ञा करते हैं बाबा अब हम पवित्र रहेंगे, गोद में लिओ। फिर बाहर में जाकर गटर में गिरते हैं। ऐसे2 समाचार बाबा के पास आते हैं। बाबा कहते हैं ऐसे2 को जो ब्राहमणी ले आते हैं उनके उपर भी असर पड़ जाता है। इन्द्र सभा की कहानी भी है ना। तो ले आने वाले पर भी दंड पड़ जायेगा। बाबा ब्राहमणियों को हमेशा कहते हैं कच्चे2 को मत ले आओ। तुम्हारी अवस्था भी ढरक पड़ेगी। क्योंकि वेकायदे ले आते हैं ना। अच्छी2 महारथी न होने के कारण फिर छोटे2 को भी सेन्टर पर भेज देना पड़ता है। वास्तव में ब्राहमणी बनना बहुत सहज। 6, 8 दिन में भी बन सकती है। बाबा किसको भी समझाने की बहुत सहज युक्ति बताते हैं। तुम भारत वासी आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे। स्वर्गवासी थे। अब नर्कवासी हो। फिर स्वर्ग वासी बनना है। तो यह विकार छोड़ो। सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाए। कितना सहज है, परन्तु पत्थर बुधि बिलकुल समझते ही नहीं। खुद ही नहीं समझते तो और को क्या समझावेंगे। वाणप्रस्थ अवस्था में भी मोह की रग लटकी रहती है। आजकल वाणप्रस्थ अवस्था में इतने नहीं जाते हैं। तमोप्रधान है ना। यहाँ ही फंसे रहते। आगे वाणप्रस्थियों की बड़े2 आश्रम थे। आज कल इतने नहीं हैं। 90 वर्ष के हो जाते हैं तो घरबार को नहीं छोड़ते। समझते ही नहीं है वाणी से परे जाना है। अब एक ही ईश्वर के शरण में जाना है। उनको ही याद करना है। भगवान कौन है यह भी नहीं जानते सर्वव्यापी कह देते। तो याद किसको करें। कितना तमोप्रधान है। यह भी नहीं समझते हम पुजारी हैं। बड़े2 शंकराचार्य जैसे भी पूजा करते हैं। सो भी नम्बरवन शंकराचार्य। वह भी शिव की पूजा करते हैं। तो उनको पूज्य कह कैसे सकते। पुजारी को फिर नमन क्यों करना चाहिए। यह भी अक्ल नहीं है। बाबा को बहुतों ने कहा था हम शंकराचार्य को समझावेंगे तुमको पूज्य कैसे कह सकते हैं। जबकि तुम पुजारी हो। पुजारी के चरणों में तो गिरना न चाहिए। बड़े2 गुजराती लोग इन्हों के पास जाते हैं। नमन करते हैं। तो बाबा ने शंकराचार्य के लिए समझाया था, परन्तु कोई में ताकत नहीं योग की। इसलिए काम कर नहीं सकते। आंखें इतना धोखा देती है बात मत पूछो। कोई की अच्छी शिकल2 सुनी तो बस उन पर फिदा हो जाते। फिर कुछ कहो तो बिगर पड़ते। यह नहीं समझते हम बिगरते हैं अपना ही नुकसान करते हैं। दजाई तो स्थापन होनी ही है ना। इसलिए बाबा ने समझाया है आंखें ही हर हालत में धोखा देती है। इन पर जांपता चाहिए। बुधि में यह खनी चाहिए यह पुरानी दुनिया तो खतम होनी ही है। अभी हमको जाना है घर। बस यही

तात रहे। वहां क्रिमिनल बात होती ही नहीं। बाप आए उयस पवित्र दुनिया के लिए तैयार करते हैं। इस पढ़ाई में तो ऐसेभी हैं जो 2मार्क्स भी मुश्किल उठाये सकें। बहुत झूठ पाप करते रहते। देखने को भी दि नहीं होती। सर्विस एवल लाडले बच्चे को तो नयनों पर बिठाये ले जाते हैं। अज्ञान काल में कोई ऐसे बच्चे होते है तो कहते हैं यह मुआ भला। बड़ा बाबा भी कहते हैं इन्होने जन्म ही क्यों लिया। तो अधमों का उधार करने लिए बड़े बहादुर चाहिए। उस गवर्मेन्ट में तो बड़े2 गुण्ड होती हैं। टिप टाप रहती है। पढ़े लिखे। यहां तो अहिल्यायें, कुबजायें भिलनियाँ हैं। उनको बाप बैठ उंच उठाते हैं। कोई होशियार होते हैं तो बस फिर किसका नाम लिया जाता है तो आग लग जाती। फलाणों को सेमीनार में बुलाया है हमको क्यों नहीं। अरे तुम अपनी सर्विस करते रहो। बुलावें न बुलावें इस तुमको क्या होता है। बाप को आया कर्प से बुलाया है हे पतित-पावन आओ। अब आये हैं तो चलन कैसे चलते हैं। झूठ बिगर तो चल नहीं सकते। ऐसे भी हैं बात मत पूछो। अज्ञान काल में बाबा के पास दरबान भी बड़े इमानदार होते थे। सब समान खोल कर जाते थे। वेतन अच्छा मिलता था। खर्चे आद भी मिलते थे। बड़े खुश रहते थे। यहां बाबा कितना सम्भालते हैं। कहां गटर में न चले जाएं। परन्तु कोई2 पर बिलकुल असर ही नहीं होता। चलन भी बड़ी फसल चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं उस पढ़ाई में भी कोई बड़ा इमतहान पास करते हैं तो कितना टिप टाप हो जाता है। यहां तो बाप गरीब निवाज है। गरीब ही कुछ न कुछ भेज देते हैं। एक दो पैसे का भी एम.ओ. भेज देते हैं। बाप कहते हैं तुम तो महान सौभाग्यशाली हो। रिटर्न में बहुत मिल जाता है। यह भी कोई नई बात नहीं। साक्षी हो सब देखते हैं। बाप कहते हैबच्चे अच्छी रीत पढ़ो। यह ईश्वरीय यज्ञ है। जो चाहिए सो लो। स्वर्ग में तो सब कुछ मिलना है। फिर भी खुश नहीं रहते। समझते नहीं। वे क्या सर्विस करेंगे। बाबा को तो सर्विस में बड़ी पूर्त चाहिए। स्वदेश जैसे। मोहिनी जैसे फिक्र हो। तुम्हारा नाम बहुत वाला हो जावेगा। फिर तुमको बहुत मान देंगे। बाबा सब डैरेक्शन देते रहते हैं। बाकि यहां सब और क्या करेंगे। बाबा तो कहते हैं यहां बच्चों को जितना समय मिले याद में रहो। इमतहान के दिन जब नजदीक होती है तो एकान्त में जाये पढ़ते हैं। प्राइवेट टिचर भी रखते हैं। हमारे पास टिचर तो बहुत है। सिर्फ पढ़ने का शौक हो। माया ऐसी है जो एकदम बुधि खराब कर देती है। समझते नहीं हम अपना कल्याण नहीं करते तो औरों का क्या करेंगे। अपने उपर रहम नहीं करते। बाप तो बहुत सहज समझाते हैं। सिर्फ अपन को आत्मा निश्चय करो। यह शरीर तो विनाशी है। तुम आत्मा अविनाशी हो। यह ज्ञान एक ही बार मिलता है। फिर सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक किसको मिलता नहीं। तुमको ही मिलता है। हम आत्मा है यह पक्का निश्चय कर लो। बाप से हमको वर्सा लेना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगी। बस। यह अन्दर रटते रहो तो भी बहुत कल्याण हो सकता है। परन्तु चार्ट रखते ही नहीं। लिखते2 फिर थक जाते हैं। बाबा बहुत सहज कर बतलाते हैं। हम आत्मा सतोप्रधान थी। अब तमोप्रधान बना हूं। अबे बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। कितना सहज है। फिर भी भूल जाते हैं। यह एक सिर्फ पाठ देता हूं। जितना समय बैठो अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा बाबा का बच्चा हूं। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। कितना सहज युक्ति बतलाते हैं। सभी बच्चे सुन रहे हैं ना। बाबा खुद प्रेक्टीस करते है। तब तो सुनाते है ना। मैं बाबा का रथ हूं। बाबा मुझे खिलाते हैं। तुम बच्चेभी ऐसे समझो शिव बाबा केरथ को मालिश करते हैं। उसने लोन लिया है। शिव बाबा को ही याद करते रहो तो कितना फायदा हो जाए। परन्तु भूल जाते हैं। बहुत सहज है। धंधे में कोई ग्राहक नहीं है, अच्छा याद में बैठ जाओ। मैं आत्मा हूं बाबा को याद करना है। बिमारी में भी याद कर सकते हैं। बांधेली हैं वहां बैठे तुम याद करते रहो। तुम 10-12 वर्ष वालों से भी उंच पद पाये सकते हो। अच्छा रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का यादप्यार बहुत गुड मार्निंग।